ੴ
ਸ੍ਰੀ ਸਤਿਗੁਰੂ ਰਾਮ ਸਿੰਘ ਜੀ ਸਹਾਇ

स्वतंत्रता
संग्राम के
महानायक
असहयोग व
स्वदेशी के
प्रथम प्रणेता
समाज-सुधारक
गो-रक्षक
एवं
सनातन
धर्म परंपरा
के रहनुमा

# श्री सत्गुरु राम सिंह जी

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

## स्वतंत्रता संग्राम के सूत्रधार

# श्री सत्‌गुरु राम सिंह जी

19वीं सदी में भारतवर्ष पर छाई गुलामी की अंधकारमयी रात में सतगुरू राम सिंह जी सूर्य समान प्रकट हुए। आपका अवतार 1816 ई. बसंत पंचमी को गाँव राईयां जिला लुधियाना (पंजाब) में हुआ। युवा अवस्था में आप स्वतंत्र खालसा राज, पंजाब की फौज में भी रहे। 29 मार्च 1849 को भारत का अंतिम स्वतंत्र राज्य, पंजाब भी ब्रिटिश साम्राज्य के पराधीन हो गया।

12 अप्रैल 1857 ई. को सतगुरू राम सिंह जी ने श्री भैणी साहिब, पंजाब में श्वेत तिकोना ध्वज फहरा कर स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजाया। आपने बहुआयामी संग्राम का प्रारंभ किया। आप विश्व के पहले नीति-वेत्ता हैं, जिन्होनें अपने देश को आजाद करवाने के लिए विदेशी सरकार के साथ पूर्ण असहयोग एवं उनके व्यापार व नौकरियों के प्रति बहिष्कार को राजनीतिक शस्त्र के रूप में प्रयोग किया। स्वदेशी का प्रचार-प्रसार किया। लाखों लोग सतूगुरु राम सिंह जी के ध्वज तले एकत्रित हो गये। विदेशी सरकार की ओर से भारतीयों की भावनाओं के विरुद्ध गोहत्या हेतु बूचड़खाने खोले गए।

सन् 1871-72 ई. में नामधारी सिक्खों ने गो हत्या के खिलाफ विदेशी साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। अमृतसर, रायकोट, लुधियाना में नामधारी सिक्खों को सरेआम फाँसी के फंदों पर लटका कर शहीद कर दिया गया। 17-18 जनवरी 1872 ई. को मलेरकोटला में 66 नामधारी सिक्खों को तोपों के सन्मुख खड़े कर उड़ा दिया गया।

17-18 जनवरी 1872 की मध्य रात्रि के समय सतूगुरु राम सिंह जी को श्री भैणी साहिब से लुधियाना एवं लुधियाना से विशेष रेल द्वारा इलाहाबाद भेज दिया गया।

19 जनवरी 1872 को श्री सतूगुरु जी को सेवक नानू सिंह एवं प्रमुख सूबाओं सहित इलाहाबाद किले में नजरबंद कर दिया गया। श्री भैणी साहिब में पुलिस चौकी स्थापित की गई, जो 51 वर्ष तक कायम रही। इसके द्वारा नामधारी सिक्खों का उत्पीड़न किया गया।

सतूगुरु राम सिंह जी को सेवक व सचिव नानू सिंह सहित 10 मार्च 1872 को इलाहाबाद से रेल द्वारा कलकत्ता एवं समुद्री जहाज द्वारा रंगून (बर्मा) निर्वासित किया गया। आपके शिष्य 10 प्रमुख सूबाजनों को प्रयागराज किले से देश के दूरदराज किलों में कैद कर दिया गया। सतूगुरु राम सिंह जी के देश-निर्वासन के पश्चात् सतूगुरु हरी सिंह जी और सतूगुरु प्रताप सिंह जी ने आज़ादी संग्राम का नेतृत्व किया। अनेक देश-भक्तों ने सतूगुरु राम सिंह जी द्वारा चलाए स्वतंत्रता संग्राम का अनुसरण किया व अंततः परिणाम स्वरूप भारत देश आज़ाद हुआ। स्वतंत्र भारत में सतूगुरु जगजीत सिंह जी की सुयोग्य छत्र-छाया में देश के बहुआयामी विकास हेतु नामधारी समुदाय ने अहम् भूमिका निभाई। वर्तमान गदद्दी नशीन सतूगुरु उदय सिंह जी के सुयोग्य नेतृत्व में नामधारी सिक्ख, आदर्श समाज के सृजन हेतु सदैव प्रयत्नशील हैं।

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

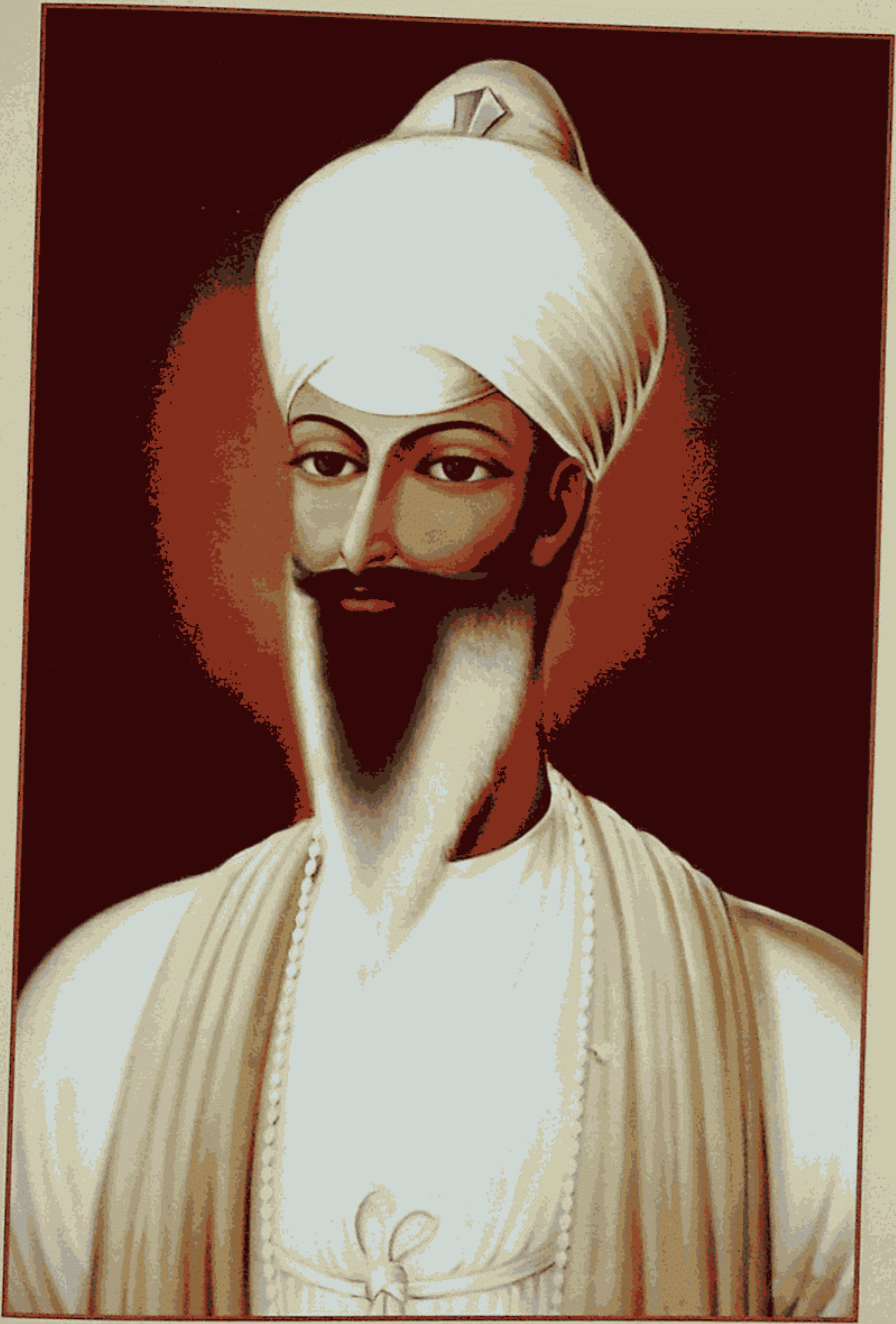

## श्री सतगुरु राम सिंह जी

(गुरु) राम सिंह सिख दार्शनिक, सुधारक अंग्रेजी व्यापार तथा नौकरियों के प्रति अहसयोग व बहिष्कार को राजनीतिक शस्त्र के रूप में प्रयोग करने वाला प्रथम् भारतीय है।

(इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका)



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

# गौरवमई 200 वर्ष
(1816-2016 ई:)

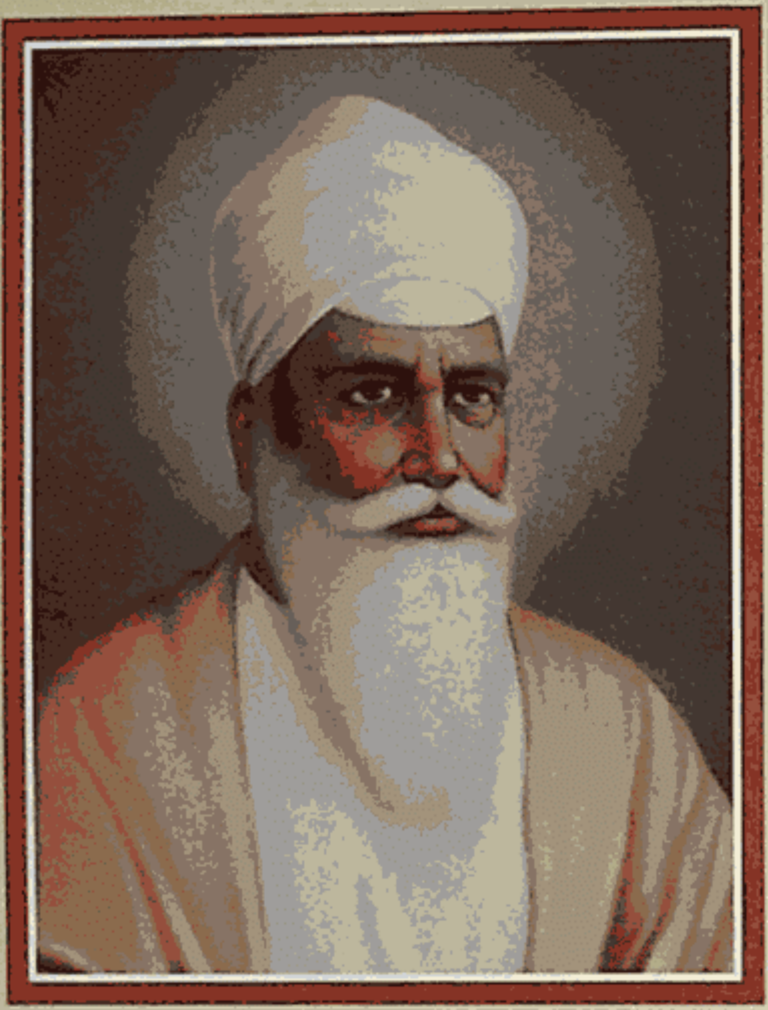

श्री सतगुरु बालक सिंह जी
(1785-1862 ई:)

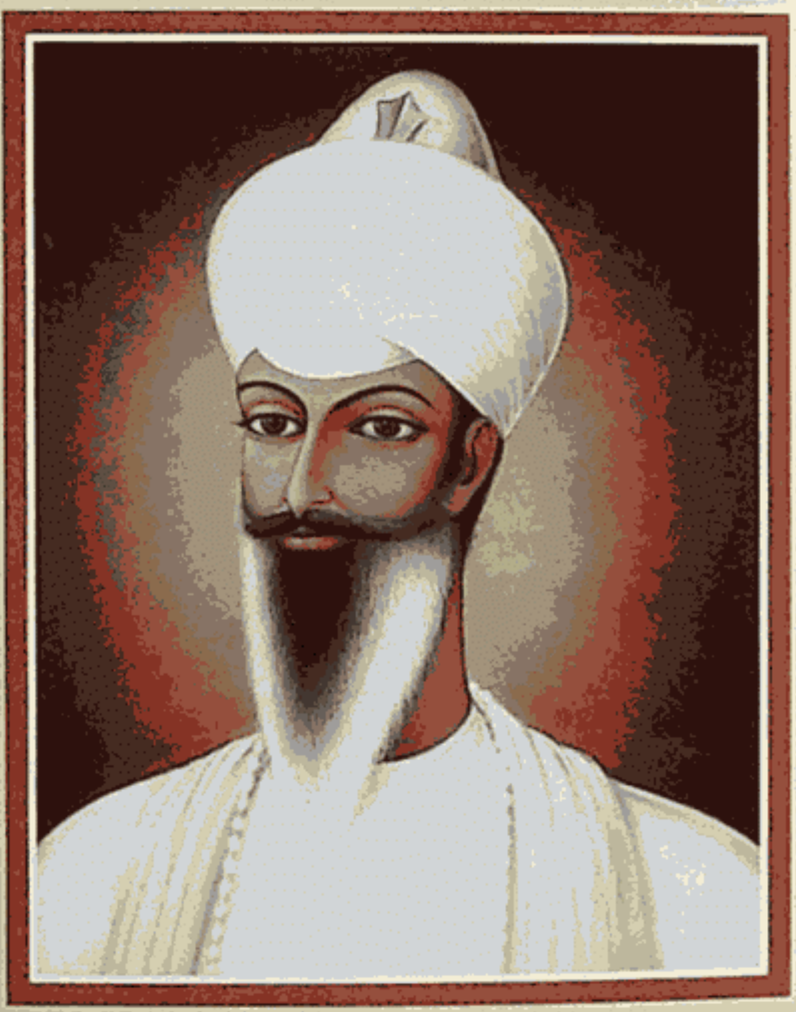

श्री सतगुरु राम सिंह जी
(1816 ई:)

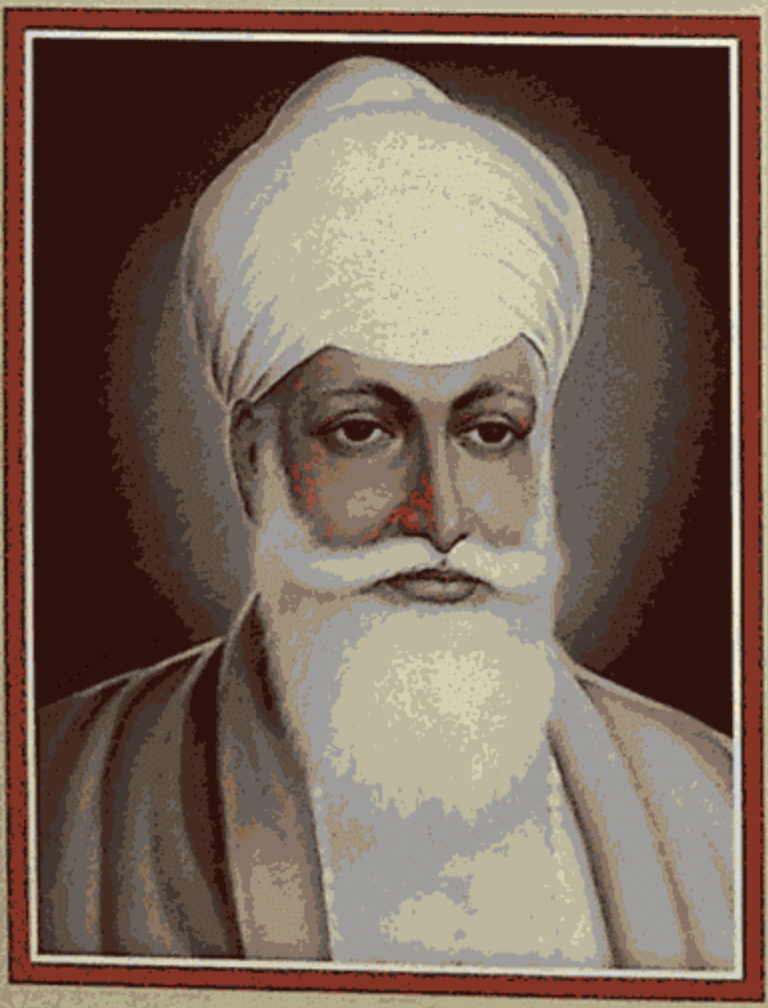

श्री सतगुरु हरी सिंह जी
(1819-1906 ई:)



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

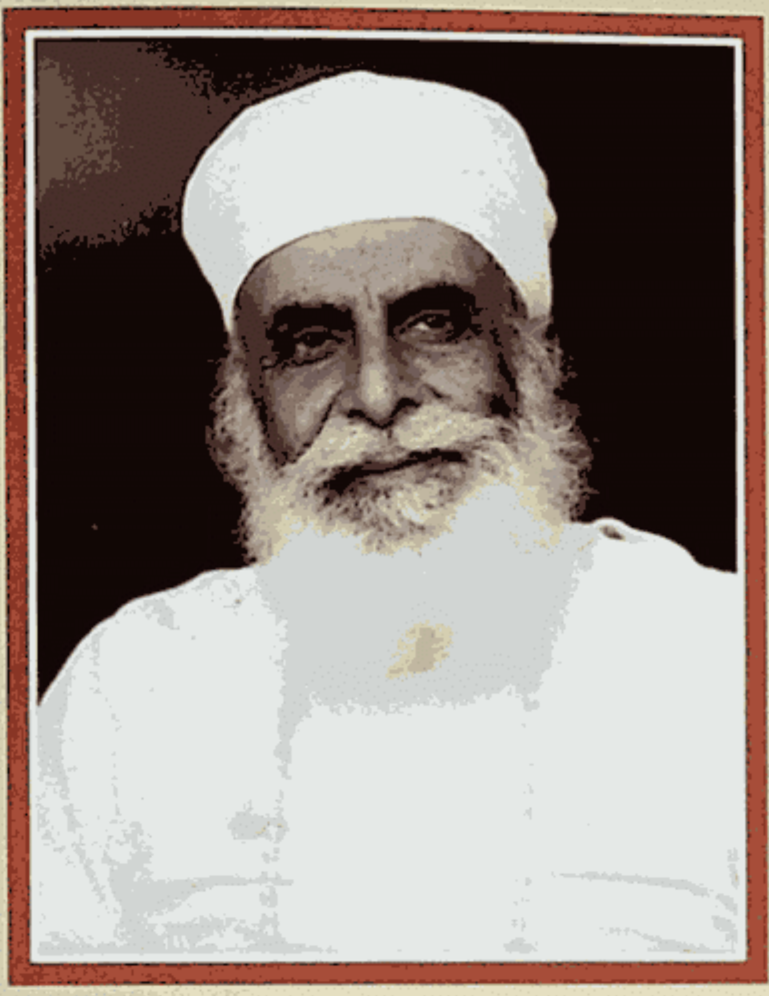

श्री सतगुरु प्रताप सिंह जी
(1890-1959 ई:)

श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी
(1920-2012 ई:)

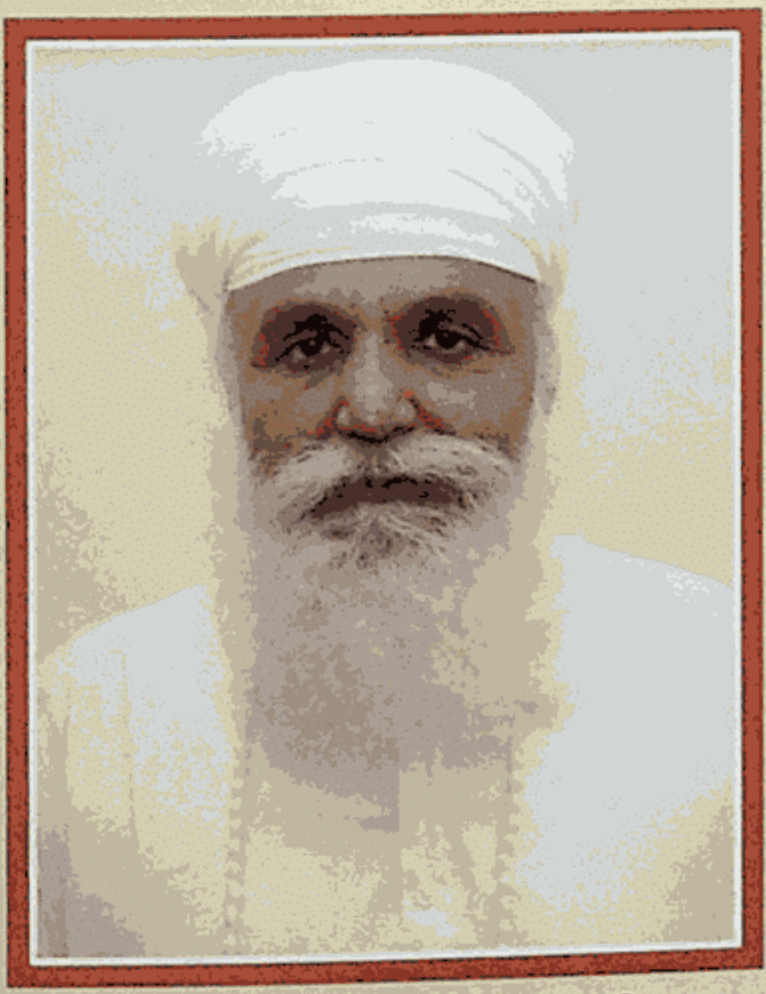

श्री सतगुरु उदय सिंह जी
(1958 ई:)



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

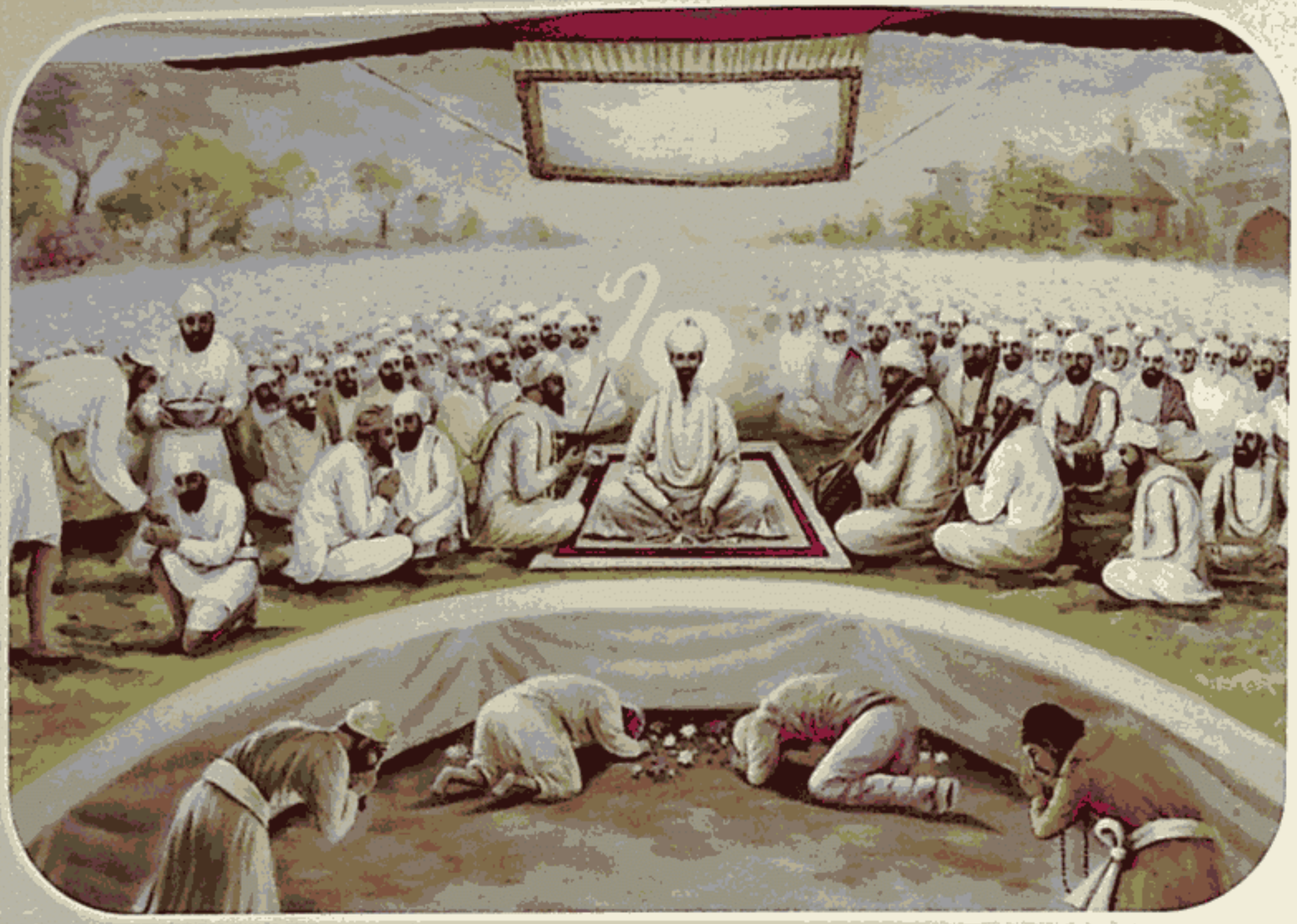

खालसे की पुर्नस्थापना तथा स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ
बैशाखी 1857 विक्रमी (अप्रैल 1857 ई:) श्री भैणी साहिब
"हुक्के छुडवाऐ रखवाऐ केश मोनयों के, सुधा छकि थाए सिख भाग जिनै जागिओ।
फैलयो जस भारी सिख थीए तांहि के अपारी। सिख पंथ बिरधाएिओ नाम रस पागिओ।
फीम भंग पोस्त शराब मास चोरी जारी, ठगी तजि थीए संत सतिजुग आ गओ।"
('पंथ प्रकाश' - ज्ञानी ज्ञान सिंह जी)

श्री सतगुरु राम सिंह जी ने 1 जुन 1863 ई: गांव सिआड़ (लुधियाना) में
प्रथम बार स्त्रियों को अमृत पान कराया।


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

3 जुन 1863 ई: को गाँव खोटे में श्री सतगुरु राम सिंह जी ने श्री आदि ग्रंथ साहिब से 'लावां' पढ़ कर प्रथम बार छ: आनंद कारज अर्थात शुभ विवाह कर "गुरमति अनंद मर्यादा" प्रारंभ की।

"श्री राम सिंह कूके पहिले। अनंद सुछंद पढ़ाए सहिले।
तिन को देख और सिख घने। लगे आनंद पढावन तने।"

('पंथ प्रकाश' - ज्ञानी ज्ञान सिंह जी)

## समाज सुधार क्रान्ति

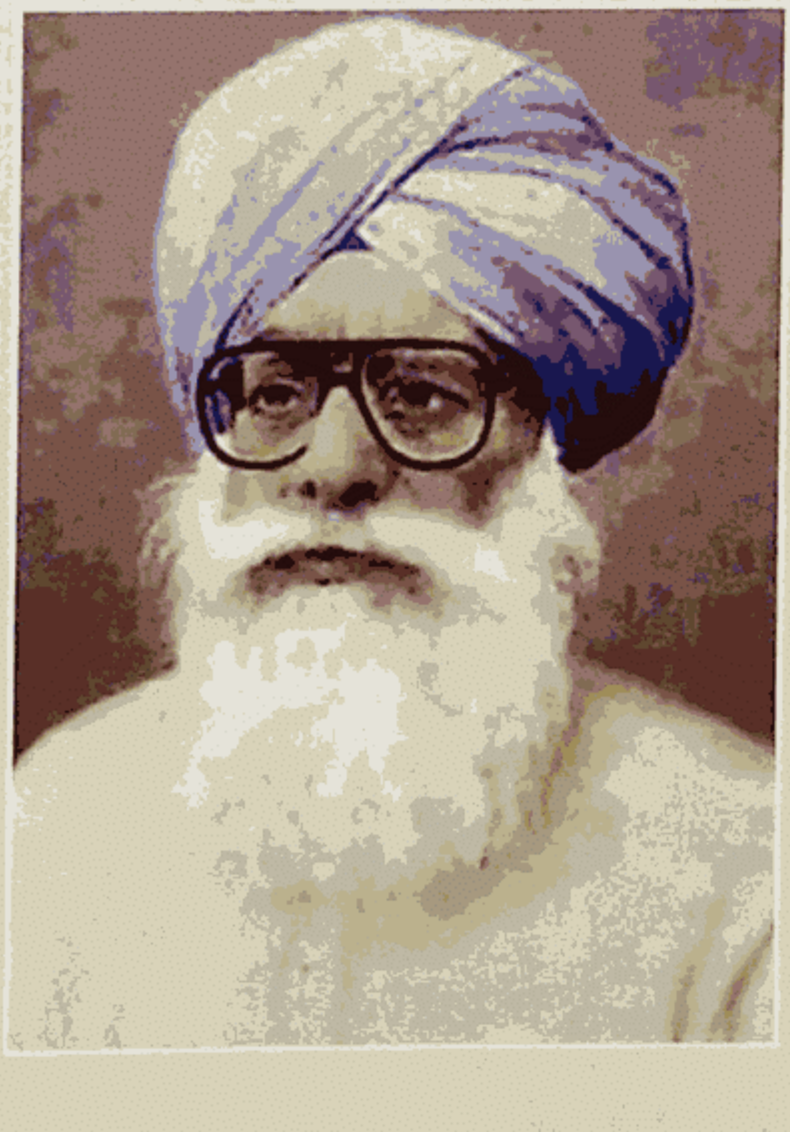

श्री कपूर सिंह आई.सी.एस. अपनी पुस्तक ''सप्त श्रंग'' में लिखते हैं- ''बाबा रामसिंह एक बहुत महान सुधारक तथा मार्गदर्षक हुए हैं, जिन्होंने समाज में पुरूश तथा स्त्री की सम्पूर्ण एकता का प्रचार किया तथा उस में सफल भी हुए। अगर उनके द्वारा देष तथा जाति के लिए किये गए अन्य महान कार्यो को छोड़ भी दिया जाए, तो उनका केवल यही प्रचार - कि ''स्त्री तथा पुरूश समाज में बराबर के हकदार है''- उनको संसार भर के मुख्य सुधारकों की पंक्ति में खड़ा कर देता है।''



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

# कूका क्रांतिकारी आन्दोलन एवं असहयोग व स्वदेशी लहर के प्रणेता
# श्री सतगुरु राम सिंह जी

अंग्रेजी अदालतों का बहिष्कार / पंचायतों की स्थापना

अंग्रेजी विद्यालयों का बहिष्कार / धर्मशालाओं में बच्चों को शिक्षा

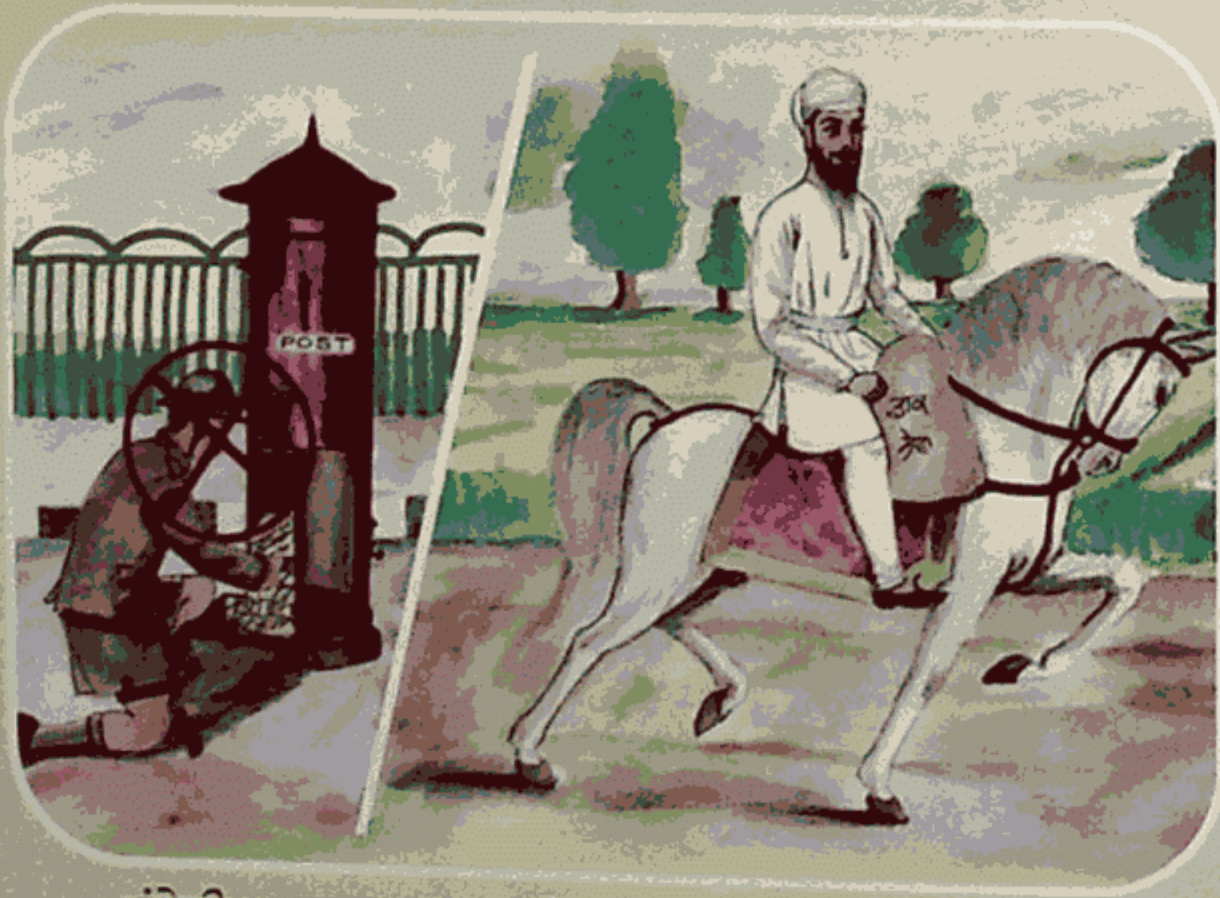


अंग्रेजी डाक-तार का बहिष्कार / स्वयं का डाक प्रबंध


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

विदेशी सामग्री का बहिष्कार / स्वदेशी का प्रचार

अंग्रेजी रेल का बहिष्कार / अपने यातायात के साधन

गुरु राम सिंह जी स्वतंत्रता को भी धर्म का अंग समझते थे। हमारे देश में महात्मा गांधी ने जो असहयोग इतने जोर से चलाया है उसका गुरु राम सिंह जी ने प्रायः पच्चास वर्श पूर्व ही नामधारियों में प्रचार किया था। उनके सिद्धातों में पांच चीजें प्रमुख थीं–

(1) सरकारी नौकरी का वहिष्कार

(2) सरकारी अदालतों का वहिष्कार

(3) सरकारी स्कूलों का वहिष्कार

(4) विदेषी वस्त्रों का वहिष्कार

(5) ऐसे कानून मानने से इन्कार जो आत्मा के विरुद्ध हैं।

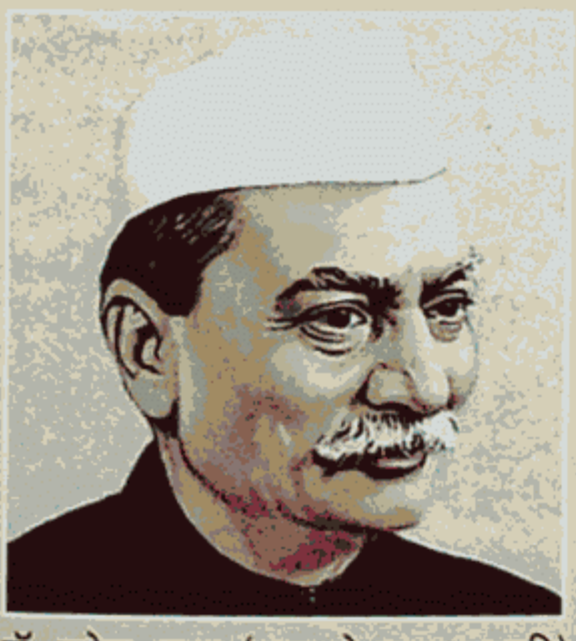

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति) के सन् 1935 में लिखे लेख से साभार


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

# श्री सतगुरु राम सिंह जी प्रचार दौरे पर

गुरू राम सिंह को केवल संत स्वभाव फकीर कहलवाने का कोई बहाना नहीं। वह आधी दर्जन घोडसवारों तथा बीसीओं पैदल अनुधाइयों के साथ आता है। वह आपके कमरे में राजकुमार की तरह दरबारियों से घिरा प्रवेश करता है।

सतगुरु राम सिंह जी को जून 1863 ई: को बर्तानिया सरकार ने श्री भैणी साहिब में नजरबंद कर दिया। अपने गुरसिखी व स्वतंत्रता प्राप्ती के प्रचार को चलायमान रखने हेतु पाँच सूबे बनाये, उन पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। फिर सत्रह अन्य बनाये, उनके प्रचार पर भी कड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया। ततूपश्चात ब्रिटिश अधिकारी (जिलाधीश लुधियाना) ने सतगुरु जी को अहँ पूर्ण व्यंग्य किया "बाबा साहिब अब क्या करोगे?"
सतगुरु राम सिंह जी ने जोश मे आ कर दृढ़तापूर्वक बचन किया
"जा ओए बिल्लिआ। मैं घर घर राम सिंह कर दिआँगा।"

श्री सतगुरु राम सिंह जी शिकारी को पैसे देकर पशु-पंक्षियों को आजाद करवाते हुए।

1869 रियासत कश्मीर में स्थापित कूका पलटन

दसमे गुरू के सिंघ सादिक सही हैं सभि, लालसा ललाम राज लैबे की अचूके हैं।
हेरै जैसे लखण हैं टेरे तैसे ज्ञान सिंघ, ऐसे परसिद्ध ही अबिद्ध सिख कूके हैं।
–पंथ प्रकाश ज्ञानी ज्ञान सिंह

कूकिआं दा पंथ निराला
हत्थां दे विच गडवे रखदे, गल विच ऊन दी माला।
अंग्रेजां दी ईन ना मंनदे, मंगिआ देण न हाला।
गहिणा गहा मूल ना पाऊंदे, सुच्चा रखदे चाला।
राज अंग्रेजां दा चंद रोज़ दा चाला।
–लोक बोली


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

15 सितंबर 1871 शहीदी साका अमृतसर

दैन लागे फांसी जबि आए खुद कूके तबि, कातल सबूत आप थाए सभि तौर पै।
खुशी होए दए सीस गये ईस लोक माहि कोटले मलेर फेर भयो साका और पै........

ज्ञानी ज्ञान सिंह

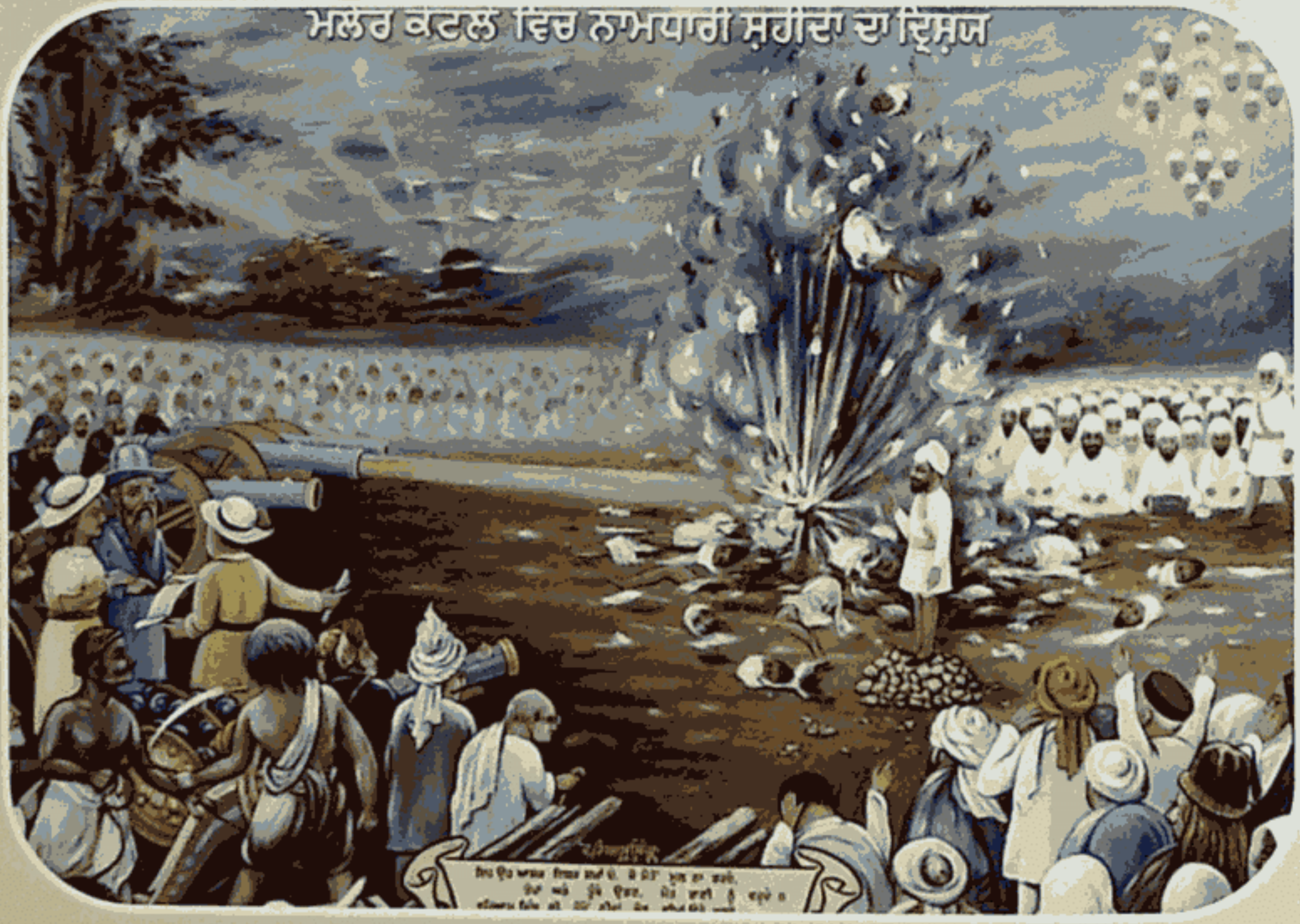


शहीदी साका मालेर कोटला 66 नामधारी सिखों को तोपों से उड़ाये जाने का दृश्य
(17-18 जनवरी 1872 ई:)

"उन हित हुकम अंग्रेजी आयो। इन को तोपन संग उडायो।
जब इहि हुकम उनै सुन पायो। खुशी भए अति हिय हुलसायो।
दीवे पर जिऊ आऐ पतंगे। तिऊं तोपन दिस जाए निशंगे।
ऊडे खूशी है-है कर सारे। जरा न कीने प्राण प्यारे। इह हमने खुद नैण निहारै ॥

पंथ प्रकाश - भाषा विभाग पंजाब


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

**अमर शहीद बिशन सिंह**

12 वर्षीय बालक बिशन सिंह ने डी.सी कावन की दाढ़ी को झपटा तथा सिपाहियों ने तलवार से गर्दन काट दी। (शहीदी : 17 जनवरी 1872 ई:, मलेरकोटला)

कूका आंदोलन का इतिहास अब तक लोगों के समक्ष नहीं आया किसी ने उनको महत्वपूर्ण समझा ही नहीं। स्वार्थ या जरूरत के लिए उन्होनें प्राण दिये होते तो हम उनको नजर अंदाज कर सकते थे। परन्तु उनमें देश प्रेम का भाव कूट कूट कर भरा हुआ था। वह तो तोपों के समक्ष खडे होकर भी हंस देते थे। क्या वे भुलाने योग्य है? फिर हमारे देश भक्त ही इस तरह क्यों भुलाकर घोर अंधकार में फेंक दिये जायें?

-शहीद भगत सिंह

(हिन्दी मासिक) महारथी फरवरी 1928 ई.


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

## परदेस गमन

सत्‌गुरु राम सिंह जी को बंगाल रैग्यूलेशन एक्ट 1818 धारा 3 के अंर्तगत 16 जनवरी 1872 ई: को अंग्रेज सरकार ने निर्वासन का आदेश जारी कर दिया। भैणी साहिब से इलाहाबाद-कोलकाता तथा फिर वर्मा में शाही कैदी (राज्य बंदी) के रूप में पहुँचा दिया।

श्री भैणी साहिब से बैलगाडी पर श्री सत्‌गुरू जी के प्रस्थान तथा संगतों की वैराग्यमयी दशा का दृश्य।

लुधियाना रेलवे स्टेशन से विशेष रेल गाडी द्वारा प्रयाग राज (इलाहाबाद) को प्रस्थान
18 जनवरी 1872 प्रात: 4 बजे



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

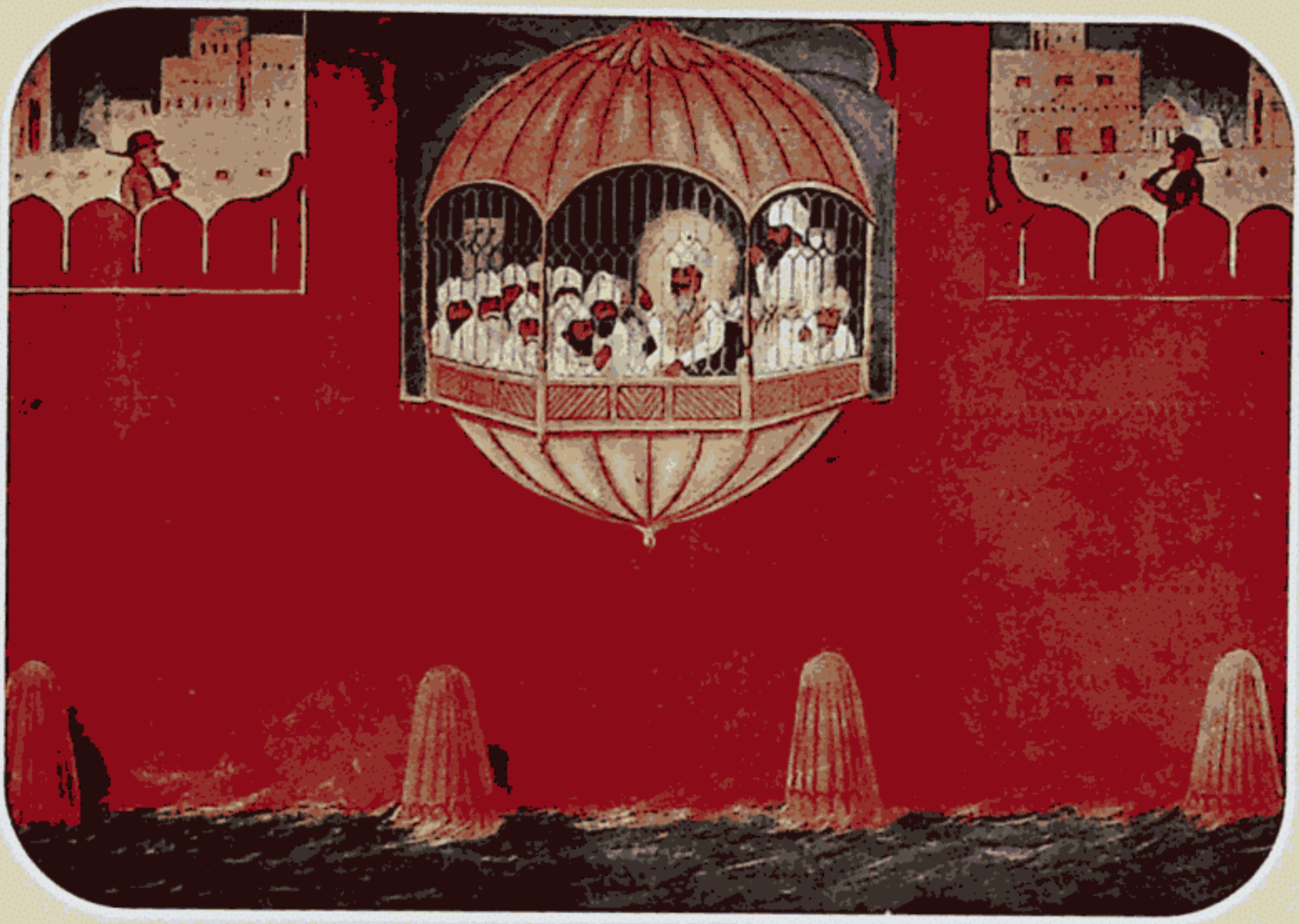

जनवरी 1872, प्रयागराज किले में नज़रबंद श्री सतगुरु राम सिंह जी व उनके प्रमुख सूबे।

# WARRANT OF GURU RAM SINGH

No. 46

To

THE CHIEF COMMISSIONER OF BRITISH BURMAH.

WHEREAS the Governor General in Council, for good and sufficient reasons, has seen fit to determine that Ram Singh

shall be placed under personal restraint in British Burmah, you are hereby required and commanded, in pursuance of that determination, to receive the person abovenamed into your custody, and to deal with him in conformity to the orders of the Governor General in Council, and the provisions of Regulation III. of 1818.

By Order of the Governor General in Council,

9/3/72

*Secy. to the Govt. of India, in the Home Dept.*

FORT WILLIAM;
The 9 March 1872.

देश-निर्वासन हेतु श्री सतगुरु राम सिंह जी हेतु वारंट।



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

11 मार्च 1872, श्री सतगुरु राम सिंह जी को कलकता बंदरगाह से रंगून (बर्मा) ले जाने का दृष्य।

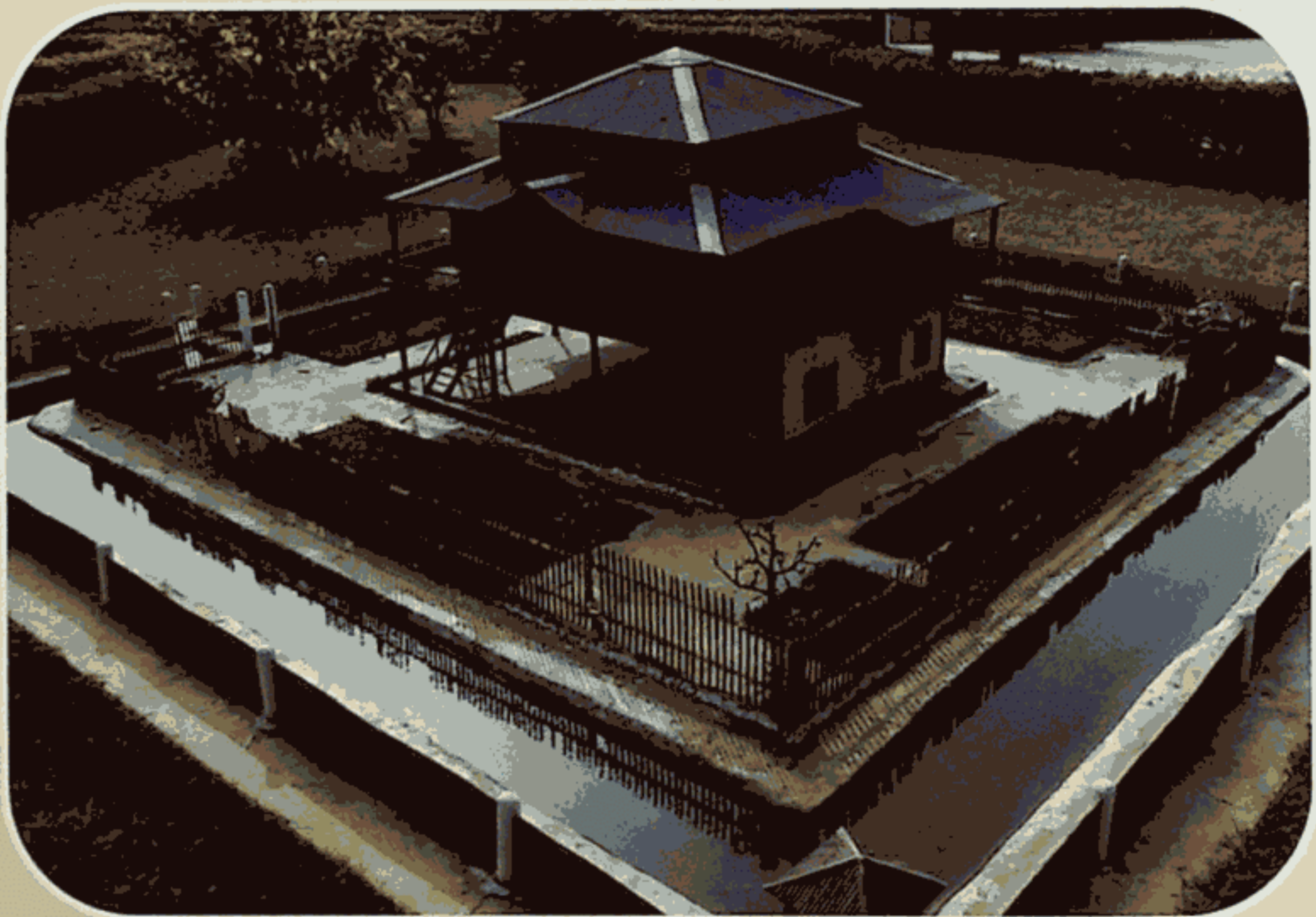

रंगून (बर्मा) बंगले का मॉडल

यहां श्री सतगुरु राम सिंह जी को देश निर्वासन के दौरान 1872 ई. से 1880 ई. तक नज़रबंद रखा गया।

इसी जगह आखिरी मुगल बादशाह बहादुर शाह जफ़र को रखा गया था।



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

1881 ई: मरगोई (बर्मा) में स. मीहां सिंह कड़ी सुरक्षा के बावजूद जंगला फाँद कर बंगले में प्रवेश करते हुए।

A photograph of Gurcharan Singh Kuka—vide Secret Consultation, January 1882, Nos. 558-599
( Courtesy : National Archives of India )

यह बात माननी ही पड़ेगी कि गुरचरन सिंह के काम ने 19वीं सदी के भारत की स्वतंत्रता लहर को सेंटपीटररसबर्ग से बर्मा तक फैला दिया था तथा स्वतंत्रता की लडाई के इतिहास में गुरू राम सिंह, मौलबीन जेल के कांसटेबल हरनाम सिंह, भैणी साहिब के गुरू बुद्ध सिंह (सतगुरू हरी सिंह) सिरहाली के मीहां सिंह, संत सिंह, महुआ बजार गली के वनबिहारी सिंह, चक्क पिराणा के गुरचरन सिंह, रूसी हाकम कारडक मिआन, करोल कोव व ईवानोव सभी ने मिलकर हैरान करने वाले अध्याय की रचना की है।

-डा. पी.सी. राय



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

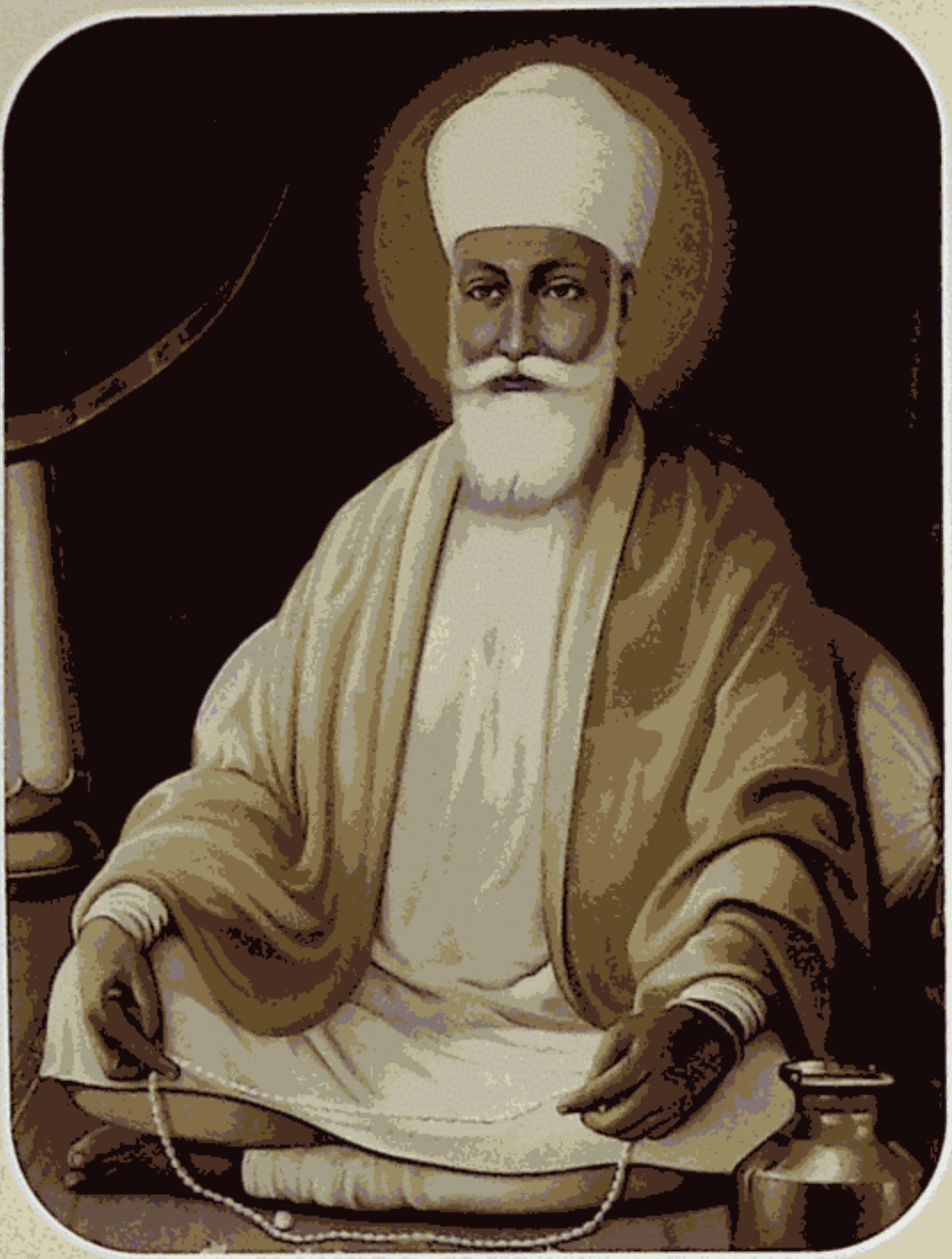

श्री सतगुरु हरी सिंह जी

सतगुरु राम सिंह जी के देश निर्वासन (जनवरी 1872 ई:) के पश्चात् श्री भैणी साहिब में स्थायी पुलिस चौंकी बिठा दी गयी। विदेशी सरकार ने नामधारी सिखों पर अकथनीय तथा असहनीय प्रहार किये। ऐसे संकट के समय सतगुरु हरी सिंह जी ने सिक्खी को हरा रखा तथा स्वतंत्रता की ज्योति को जलाए रखा। नामधारी सिक्खों के दीवान लगाने तथा पाठ करने पर भी प्रतिबंध थे। सरकारी आदेशों की परवाह न करते हुए गुप्त रूप में अखंड पाठ जारी रखे गये। अखंड पाठ करने के दोष में नामधारी सिक्खों को सात साल की सजा हुई तथा अनेकों को जुर्माने किये गए। कई सिंह जेलों में ही मृत्यु को प्राप्त हुए।

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

श्री भैणी साहिब में 51 वर्ष (1872 से 1923 ई.) तक पुलिस चौकी बिठा दी गई। जिसने नामधारियों को घोर यातनाएं दी।

श्री सतगुरु राम सिंह जी ने 1872 ई: में श्री भैणी साहिब में सदा-वरत लंगर प्रारंभ किया। 1899 ई: के भयानक अकाल के समय श्री भैणी साहिब में बॉगड' (हरियाणा व राजस्थान का भाग) से आये हजारों काल पीड़ितों को प्रतिदिन लंगर मिलता रहा।

अंग्रेज अधिकारी (जिलाधीश लुधियाना) ने देख कर सतगुरु हरि सिंह जी को कहा। "आप इतने लोगों को रोटी दे कर बहुत अच्छा काम कर रहे हो। मैं सौ मुरब्बा (2500 एकड़) जमीन लंगर हेतु देता हूँ।" अंग्रेज अधिकारी ने पेशकश की। "सौ मुरबा ले कर हम मान लें कि शेष भारत आपका है? जब लेंगे सारा देश ही लेंगे! यह सतगुरु हरी सिंह जी का उत्तर था।

हिन्दू-सिख मिलाप अधिवेशन 1943 श्री भैणी साहिब

श्री सतगुरु प्रताप सिंह जी ने अंग्रेजी सरकार की "बाँटो और राज करो" की कूटनीति को निष्प्रभावी बनाने हेतु हिन्दू-सिख-मुसलमान मिलाप अधिवेशन किये। समाज की समरसता के लिए मिलकर बैठने की प्रेरणा दी।

सत्गुरू प्रताप सिंह जी ने देश की स्वतंत्रता हेतु संघर्ष कर रही सभी संस्थाओं-संगठनों को पूर्ण सहयोग दिया।

श्री भैणी साहिब में (बायें से) जवाहर लाल नेहरु, मासटर तारा सिंह जी, सत्गुरु प्रताप सिंह जी, डा: सेफुदीन किचलू (1939 ई:)

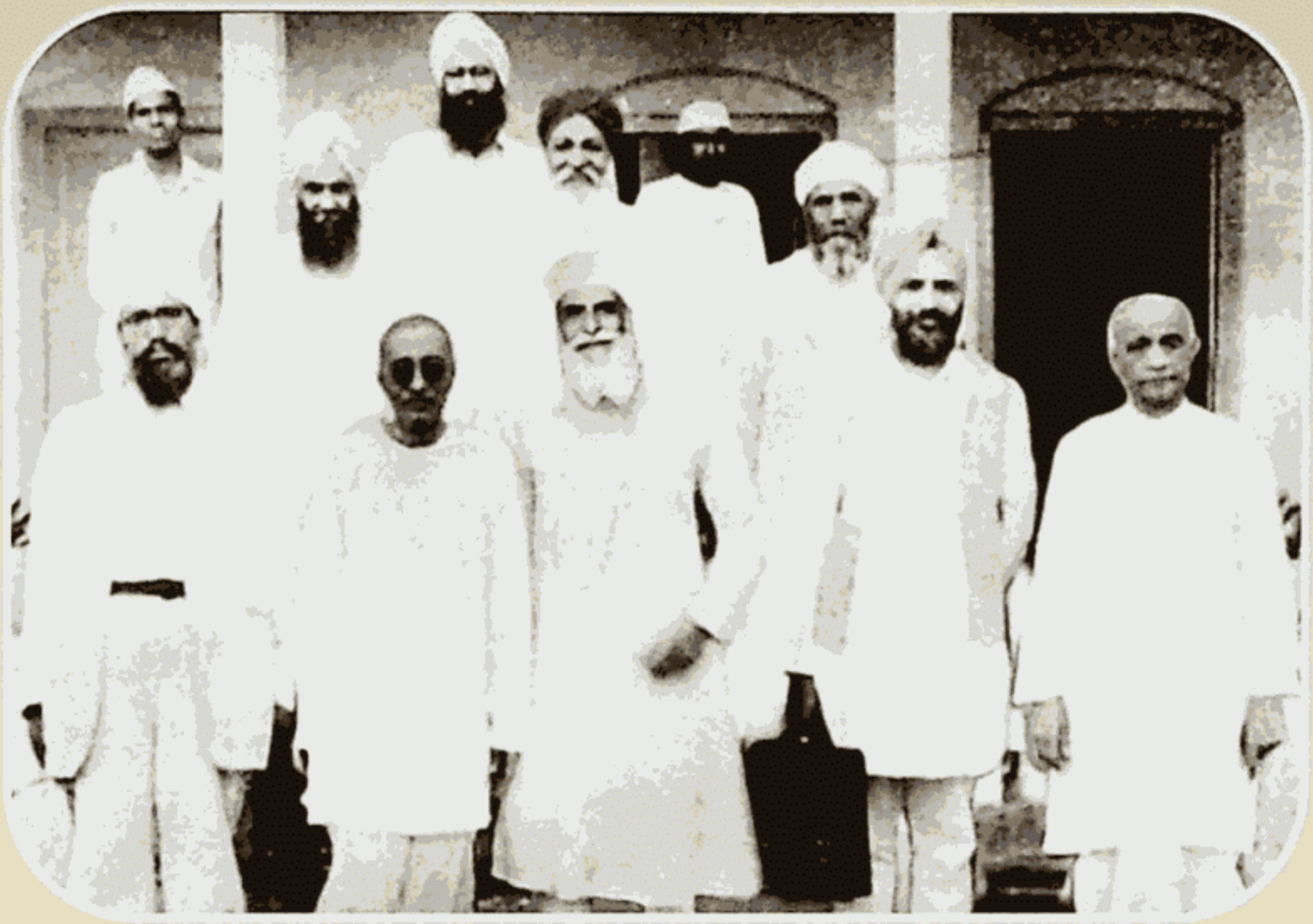

सदगुरू प्रताप सिंह जी भारत के प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं व देश भक्तों के मध्य श्री राज गोपालाचार्य बायें सरदार पटेल (दायें) 8.8.1946 दिल्ली

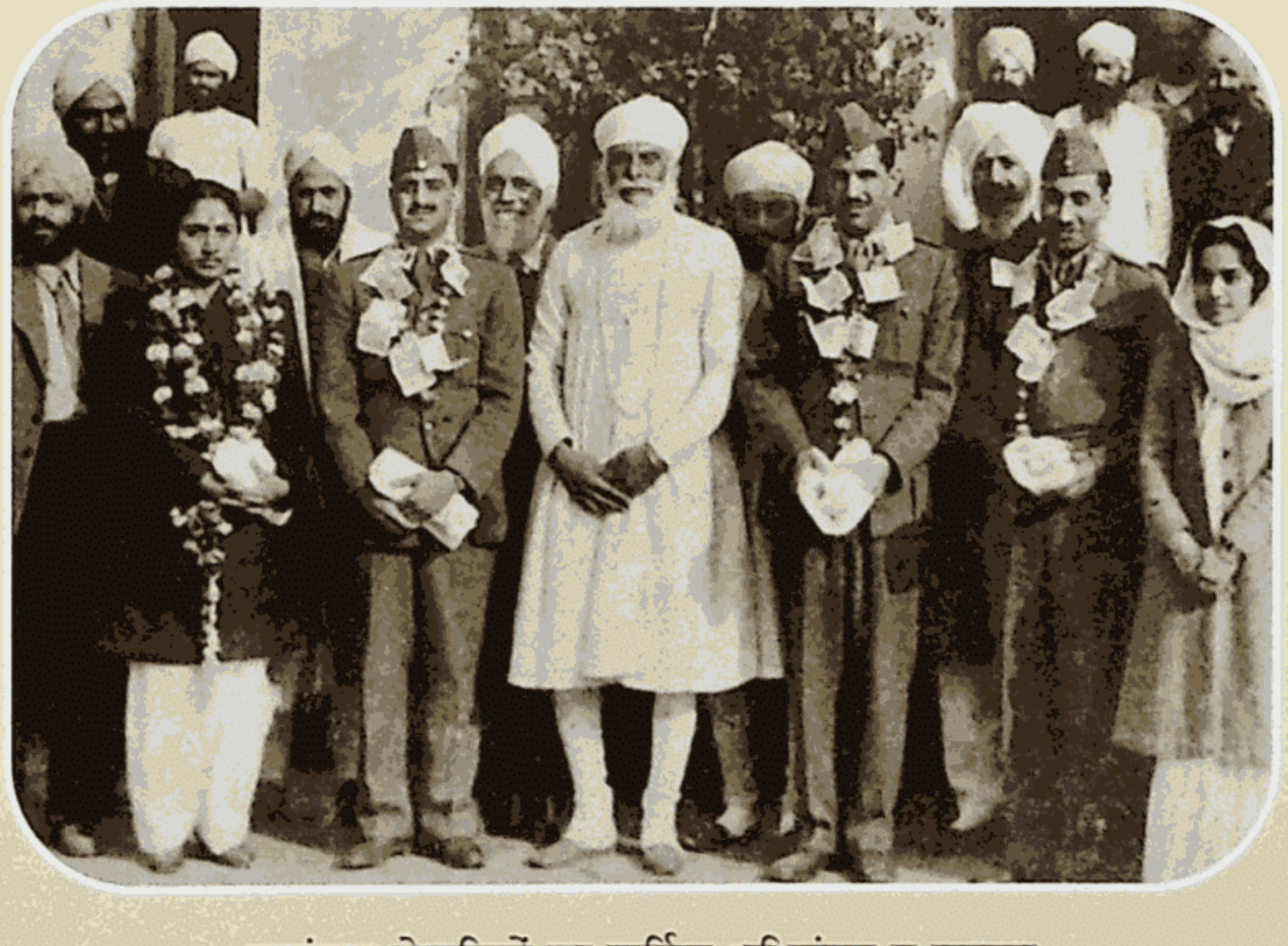

स्वतंत्रता सेनानियों का हार्दिक अभिनंदन व स्वागत
(लाहौर 1946 ई:)।

'आजाद हिंद फौज़' के जनरलों का मुकद्दमों से बरी होने पश्चात् श्री सतगुरु जी की ओर से स्वागत।

खड़े प्रथम पंक्ति में (बायें से) श्री मती ढिल्लों, जनरल शाहनवाज ख़ान, कैप्टन पी. के. सहगल, कर्नल जी. एस. ढिल्लों, श्री सत्गुरु प्रताप सिंह जी तथा (पीछे) सत्गुरु जगजीत सिंह जी।


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

सन 1950 ई. लखनऊ कैटल शो में अपने विजेयी पशुओं के साथ श्री सतगुरु प्रताप सिंह जी।


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

श्री सतगुरु प्रताप सिंह जी के साथ अपने फार्म की साहीबाल नस्ल की गाय "नौलखी" जिसने प्रतिदिन 36 किलो दूध देकर भारत में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

श्री भैणी साहिब गो-शाला में श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी गाय को गुड़ खिलाते हुए।



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

1965 ई. हैदराबाद, गो-वंश की नस्ल सुधार व संरक्षण हेतू भारत सरकार की गो-संवर्धन समिति द्वारा सर्वोच्च सम्मान 'गोपाल-रत्न' से श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी को अलंकृत किया गया।

1979 ई. डबवाली (हरियाणा) में बूचड़खाने ले जाए जा रहे गो-वंश को छुडवाकर, नामधारी सिक्खों द्वारा गो-हत्या विरोधी प्रदर्शन।



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

# नामधारी गो-शालाऐं

श्री भैणी साहिब (पंजाब)

श्री जीवन नगर (हरियाणा)

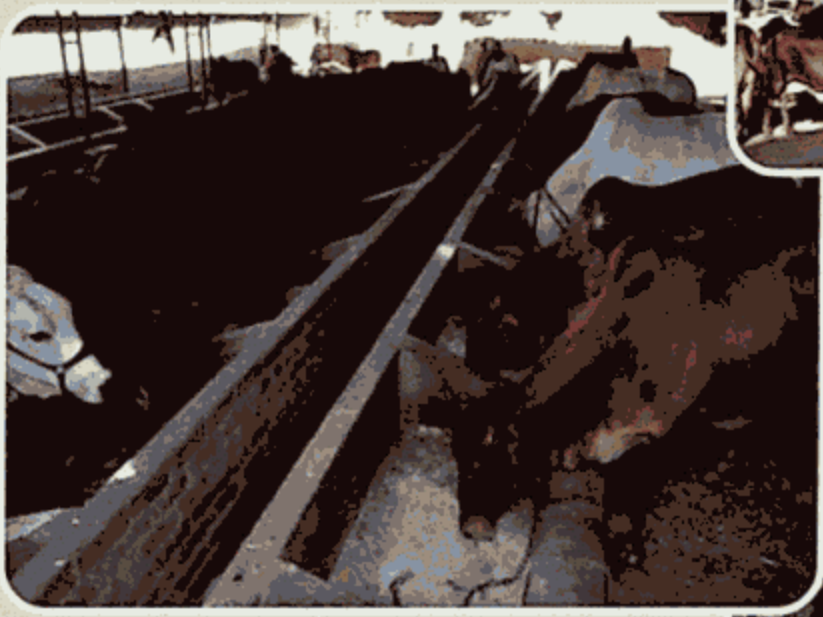

मस्तानगढ़ (हरियाणा)

टिब्बा कुएं पर (मुक्ता गो-शाला)
हरियाणा

बल गो-शाला (हरियाणा)

हिम्मतपुरा (पंजाब)



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

'रष्ट्रीय रक्षा कोष' में योगदान प्रदान करने हेतु श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी का धन्यवाद करते हुए तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरु (दिल्ली 1962 ई:)।

बाबा सोहन सिंह भकना (प्रधान, गदर पार्टी) को उनके गाँव भकना, अमृतसर में कुशल-क्षेम पूछते हुए, श्री सत्गुरु जगजीत सिंह जी।



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

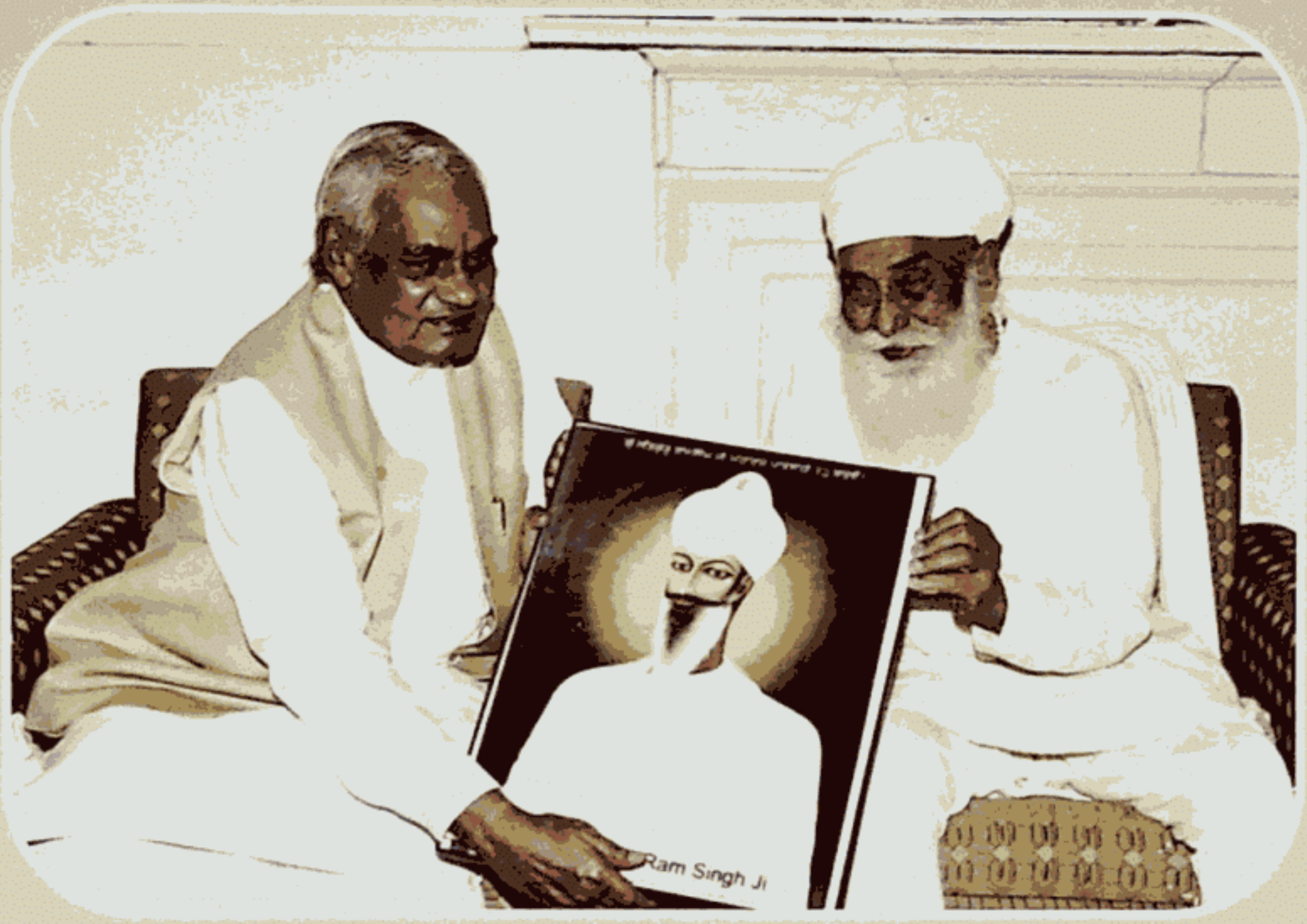


श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी तत्‌कालीन प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्री सतगुरु राम सिंह जी का चित्र अर्पित करते हुए।

तत्‌कालीन प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, श्री सत्‌गुरु जगजीत सिंह जी से आशीर्वाद लेते हुए।



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

अगस्त 2000 ई. यू.एन.ओ., न्यूयार्क मे मिलेनियम वर्ल्ड पीस रिलीजियस सम्मिट दौरान श्री अशोक सिंघल जी व श्री नरेन्द्र मोदी जी, श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

अगस्त 2000 ई. यू.एन.ओ., न्यूयार्क मे मिलेनियम वर्ल्ड पीस रिलीजियस सम्मिट दौरान श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी, श्री अशोक सिंघल जी, श्री नरेन्द्र मोदी जी व अन्य गणमान्य साधू-जन। पृष्ठ में संचालक श्री बावा जैन जी।


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

15 अप्रैल 2007, श्री भैणी साहिब (पंजाब), कूका अंदोलन की 150वीं वर्षगांठ पर श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी ध्वज फहराते हुए, साथ में माता चंद कौर जी, संत जगतार सिंह जी व अन्य सेवक जन।

15 अप्रैल 2007, श्री भैणी साहिब (पंजाब), कूका अंदोलन की 150वीं वर्षगांठ पर एकत्रित नामधारी सिक्ख संगत का विशाल जन-समूह।



Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

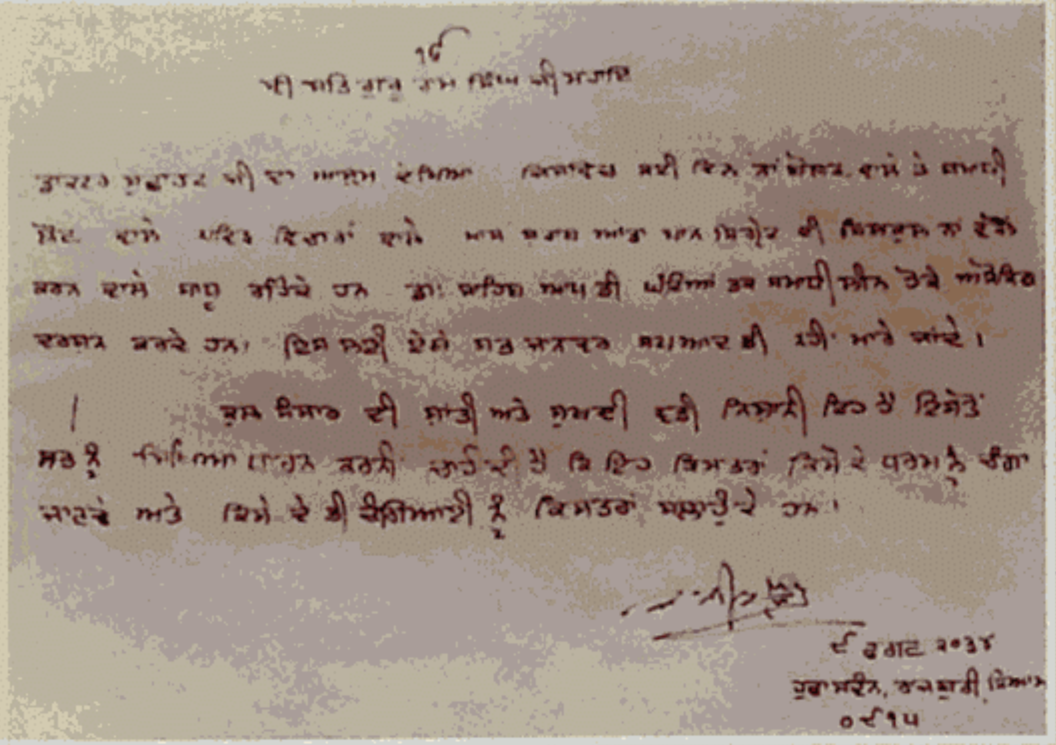

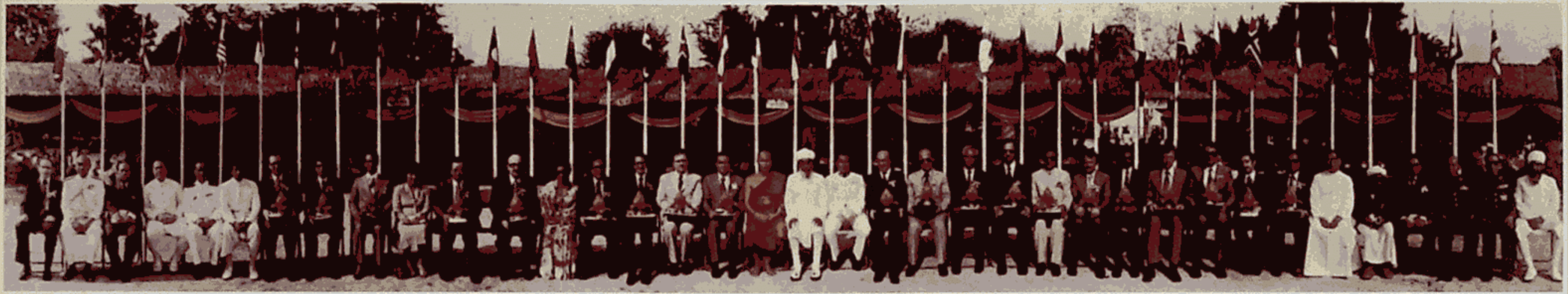

19 अक्तूबर 1978, हुफा स्वन्न, थाईलैंड में बौद्ध साधू डा. सुचाट के आश्रम में श्री सतगुरु जगजीत सिंह जी 'शांति-मंदिर' का नींव पत्थर रखने के उपरांत विश्व भर की प्रमुख हस्तियों व राजदूतों के मध्य।


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

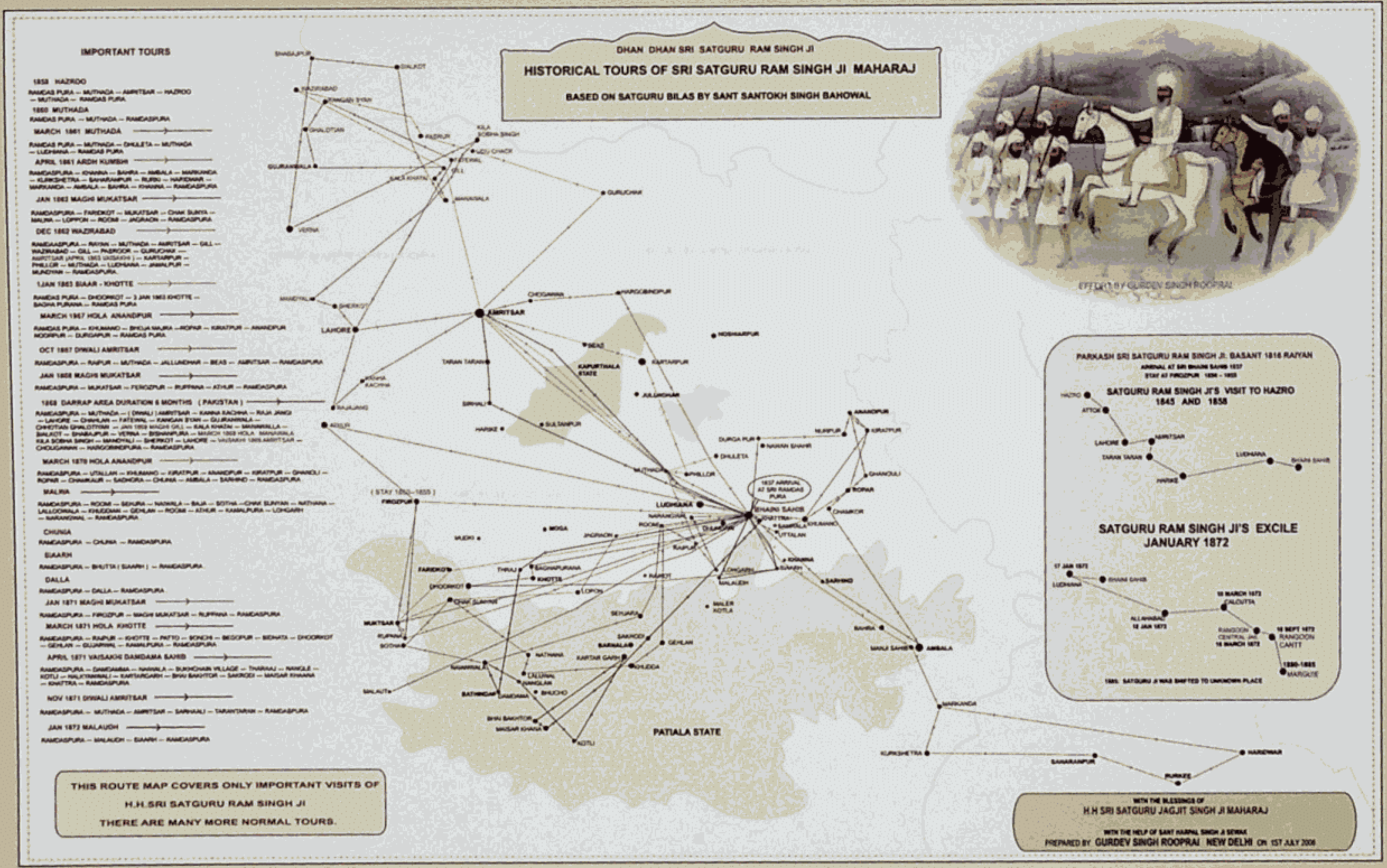


Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com

15 दिसम्बर, 1996 ई. को श्री सद्गुरू जगजीत सिंह जी के सान्निध्य में 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में श्री सद्गुरू राम सिंह जी महाराज पीठ की स्थापना

## प्रवचन श्री सद्गुरु जगजीत सिंह जी

सद्गुरु राम सिंह जी अपने रहितनामें (पत्र) में लिखा है, ''मन्दा, फिका नहीं बोलना, क्षमा करना, बोल-कबोल सबका सहन करना। जो कोई कुछ मारे तो भी क्षमा करनी।'' एक अन्य हुक्मनामें में लिखा है, ''क्षमा धीरज रखनी, क्षमा धीरज वालों के गुरु अंग-संग है। एक तरफ हमारी ताकत है और दूसरी तरफ अगर क्षमा धैर्य धारण करें तो गुरु की ताकत है। गुरु की ताकत के लिए गुरूवाणी में लिखा है :

जामि गुरु होइ बलि धनहि किआ गारव दिजए॥
जामि गुरु होइ बलि लख बाहे किआ किजए॥

नामधारी नवयुवकों को मैं विनती करू, जितना मर्जी पढ़ो, कोई हर्ज नहीं परन्तु ऐसी पढ़ाई यहां से आपको लगे हमारे पैर फिसल रहे हैं वहाँ पर पैर रखने से संकोच करो। सिनेमा मत देखा करो, नावल मत पढ़ा करो, अगर पढ़ना है तो गुरवाणी, साधुओं की कथा पढ़ा करो, रामायण पढ़ा करो, अपने धर्म ग्रन्थ पढ़ा करो।

प्रकाशक:
विश्व नामधारी संगत (रजि:)
श्री भैणी साहिब, लुधियाना-141126 (पंजाब)
फोन: 0161-2833199
ई-मेल: vnvj@sribhainisahib.com

संकलन व सम्पादन:
हरपाल सिंह सेवक, रछपाल सिंह सेवक, पंडित यादविंद्र सिंह

www.foilprintersludhiana.com | 0161-2404093

Namdhari Elibrary NamdhariElibrary@gmail.com